॥ श्रीहरिः ॥

चारु-चयन

अर्थात्

"शक्ति-भक्ति" वाटिका का सुमनसंग्रह ।

श्रीमान् ठाकुराँ देवीसिंहजी साहब
चौमूँ की आज्ञा से विन मूल्य वितरणार्थ
प्रकाशित

संग्रहकार

हनुमान शर्मा,

चौमूँ (जयपुर)

चैत्र शु० १ सं० १९९१ ता० १६-३-३४,

बाबू चांदमल चंडक के प्रबन्ध से वैदिक-यन्त्रालय
अजमेर में मुद्रित.

प्राक्कथन

ईश्वर की प्रेरणा से भक्तों की क़ैद भी संसार की भलाई के लिये ही हुआ करती है। महात्मा तुलसीदासजी ने क़ैद में रह कर ही 'हनुमान बाहुक' बनाया था। अरविंद का 'जागृतिक साहित्य' क़ैद में ही सम्पन्न हुआ था। और पं० बालगंगाधर तिलक ने 'तिलक गीता' क़ैद में ही निर्माण की थी। इन सब से ही संसार का हित हो रहा है।

वास्तव में भक्तों के लिये सुख-निवास या सत्संग-भवन आदि की ज़रूरत नहीं। वे जहां कहीं भी अपने अन्तर्यामी को आँखों के सामने उपस्थित कर लेते हैं और अन्तःकरण की भक्ति का प्रकाश फैला कर यथेच्छ दर्शन करते हैं विशेषता यह है कि उनको आराध्यदेव से कुछ कहना हुआ और उस समय वे किसी प्रकार से भीत-चिन्त-खिन्न या उत्साहित आदि हुए तो उसी अवस्था के अनुकूल अपने इष्टदेव की स्तुति पाठ कृतज्ञता-प्रकाश उपालंभदान या इज्जत फजिहती तक कर डालते हैं।

ये बातें वे जबानी करें या पद्य-बद्ध सभी प्रकार से कर सकते हैं। मगर ईश्वर की ईश्वरता देखिए वह भक्तों की बात सुनने और उनके काम करने के लिए अपनी मान-मर्यादा को छोड़ कर नंगे पाँव दौड़ते हैं और उनके अमिट संकटों को तत्काल मेटते हैं। भक्त लोग ईश्वर को सर्वेश्वर या सर्वेश्वरी चाहे जो कहें। ईश्वर उनको गणेश, महेश, दिनेश, सुरेश, ब्रह्मा, विष्णु, राम, कृष्ण, भैरव, भवानी या महाशक्ति सभी रूप में दर्शन देते और अभीष्ट सिद्धि करते हैं।

यहाँ एक ऐसे भक्त का परिचय दिया जाता है जो उपरोक्त आश्रय के आदर्श थे और सर्वेश्वर एवं सर्वेश्वरी में अभिन्न भक्ति रखते थे। उनका नाम था मुन्शी 'माधवराम' वह मारवाड़ के मेड़ता में लगभग अढ़ाई सौ वर्ष पहले हुए थे, जाति उनकी कायस्थ थी। हिन्दी, उर्दू और संस्कृत के विद्वान् थे। श्रुति, स्मृति और पुराणों में भी उनका प्रवेश था। वृन्द कवि ने उनको कविता करना सिखाया था। उनकी रचना में मौलिकता, सुन्दरता, सरलता, उत्कृष्टता और आकर्षण आदि सभी गुण सजीव थे।

जोधपुर राज्य की ओर से उन्होंने दिल्ली के बादशाहों के समीप कई वर्षों तक राज काज भी किए थे जिनसे जोधपुर

राज्य निरापद रहा था। किन्तु एक चारण के चुगली खाने पर वह २ वर्ष तक क़ैद किए गए। उसी अवसर में उन्होंने "शक्ति-भक्ति-प्रकाश" आदि का निर्माण किया जो अब दुष्प्राप्य हो गए हैं। **"चारु-चयन"** उन्हीं का प्रसाद है। और भक्तों की मनस्तुष्टि के लिए प्रस्तुत किया गया है। 'शक्ति-भक्ति-प्रकाश' में उपासना भाव (२०), भक्तमाल (४), उपालंभ (१९), करुणारस (३९), मनःशिक्षा (१३), वीररस (१०), देवीविश्वास (१०) और प्रार्थना (२५) ये १४० पद्यों के आठ प्रकरण हैं। इन में मनहर छंद का अधिक उपयोग किया है, वास्तव में वह है भी मनहर।

॥ श्रीहरिः॥

चारु-चयन

अर्थात्

शक्ति-भक्ति वाटिका का सुमन संग्रह

पहिला प्रकरण

* दोहा *

शिव हरि अज इन्द्रादि सुर, चरन शरन अवलंब।
विघ्नहरण मङ्गल करण, जय जय श्री जगदम्ब ॥१॥

(मनहर)

सैंस दल कमल पैं राजत विमल रूप,
इन्दीवर दोऊ कर अभै वर धरि हैं।
अमल वसन सुधाधर सो प्रसन्न मुख,
ताको नेक ध्यान ही प्रचण्ड पाप हरि हैं ॥
धर्म अर्थ काम मोक्ष दायक सहायक भौ,
नाम के उचारे ही ते द्वंद्व कोटि टरि हैं।

नाथन के नाथ गिरिनाथ से दिवैया आथ,
ऐसे गुरु नाथ सों सनाथ मोहि करि हैं ॥२॥

इस ध्यान में ज्ञातव्य और तत्वपूर्ण बातों का समावेश है। इसमें सन्देह नहीं कि माधवराम ब्रह्मरूप को जानते थे और चराचर में सभी जगह उसको व्याप्त मानते थे, किन्तु उस व्यापकता के साथ में शक्ति का सन्निवेश था और वही उसको व्याप्त करती है। यही कारण है कि आरम्भ में माधवराम ने शक्ति के रूप में ही ब्रह्म का निरूपण किया और उसी की प्रधानता दिखलाई।

(मनहर)

ऐरी जगरानी तेरी अकथ कहानी ताहि;
रटैं वेद वानी सब जोतिन को कन्द है।
निगुन सगुन दोऊ तेरो ही सरूप बनैं,
भेद भाव जानैं ते ही मूढ मति मन्द हैं॥
तूही रमा राम श्याम श्यामाजू जसोदा तूही,
तूही बलदेव वसुदेव नन्दनन्द हैं।
तूही अज शेष शिव तुंबरू गनेश तूही,
तूही है सुरेश हरि तूही रविचन्द हैं॥ ३ ॥

तूही जगकारन औ तारन तरनि तूही,
तूही है संहार खल-दण्ड देन शासना ।
चिदानन्द सिन्धु ताकी आनंद लहर तूही,
तूही सुखकंद दुःखद्वंद्व हू की नाशना ॥
ईश्वर स्वरूप ह्वै के विश्वको उद्योत कीन्हों,
ओतप्रोत ब्रह्म सदा जैसे फूल वासना ।
देव नर किन्नर गरीबन की चली कहा,
हर हरि विधि तेरी करत उपासना ॥ ४ ॥

तू ही वेद आगम पुरान औ कुरान तू ही,
अजपा प्रणव तू ही तू ही षट मत है ।
तूही शिवशक्ति मूल प्रकृति सुभक्ति तूही,
तूही बन्ध मोक्ष पुनि तूही जू सुमत है ॥
तूही हर्ष शोक तीन लोक को आधार तूही,
तूही सुख सम्पति तू टारन विपत्ति है ।
तेरे माया यंत्र सब जगत् आरूढ भयो,
दशों अवतार तेरे प्रेरे ही भ्रमत है ॥ ५ ॥

तूही योग यज्ञदान तूही ध्याता ध्येय ध्यान,
तूही ज्ञाता ज्ञेय ज्ञान तूही देव दानवी।
तूही है प्रवृत्ति औ निवृत्तिहू तिहारो रूप,
नित्य औ अनित्य तूही तुर्या उर आनवी॥
तूही इच्छा क्रिया सब साधन समाधि तूही,
तूही योग निद्रा नव दुर्गा बखानवी।
तूही है अरूप सब देखिए सो तेरो रूप,
कहें माधोराम तोकूं परम ज्योति जानवी ॥६॥

तूही बलि वामन औ कुंभकरण रावण तू,
कंश शिशुपाल माया जाल में झँझेरे हैं।
तूही महामोहनी अछोहनी अठारह तू,
कौरव को कालरूप भारत में प्रेरे है॥
लीला है अनन्त चतुरानन न जानै भेद,
यादव कुलहि पल एक में निबेरे हैं।
धारे अवतार भूमि भार के निवार हेतु,
उनको तो नाम है पै काम सब तेरे हैं ॥७॥

माधवराम की ये सभी उक्तियां सारगर्भित हैं। संसार में जो कुछ होता है शक्ति से होता है। ईश-ईश्वर या महेश्वरादि जो कुछ करते हैं शक्ति से संयुक्त होकर ही करते हैं। स्वयं ब्रह्मादिकों ने भी तो इसे "त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि०" आदि में सब कुछ स्वीकार किया है। फिर माधवराम का शक्ति को सब कुछ बताना ठीक ही है।

परन्तु आगे चलकर उन्होंने विचारे अग्नि, वायु, वरुण, सूर्य, चन्द्र, तारागण अथवा ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि की मिट्टी पलीद कर दी है। उनके सम्पूर्ण महत्व को कोने में रखवा दिया है। और उनको हाथ जुड़वा कर शक्ति के सामने खड़ा कर दिया है। वर्णन पढ़िए कैसा विलक्षण है।

(मनहर)

ब्रह्मा विष्णु रुद्र ईश सदाशिव पंच प्रेत,
चिदानन्दरूप पर्यङ्क के कहार हैं।
चन्द्र से वितान कोटि भानु से मशालची हैं,
महातत्व मंत्री गुणतीन पेशकार हैं॥
पासी जलधारी धन पालसे भण्डारी त्योंही,
कोटि सुरपाल लोकपाल चोपदार हैं।

नाग यक्ष किन्नर हैं पामर पयादन से,
देवी ! जगदंब ! तेरी ऐसी सरकार हैं ॥ ८ ॥

पौन से फरास कोटिदास कैलाशपति,
चित्रगुप्त लेखक रु यम कोटवार हैं ।
चिन्तामनि तेरी दासी पाँवबंधी मेनका सी,
देव तरु देवी तेरे बागन को झार हैं ॥
आठ सिद्धि नवनिधि चारवर्ग पौरखरी,
कोटि कोटि मेघमाला द्वारे पनिहारि हैं ।
राजन की राजा महाराजा श्रीसुराजरानी,
अम्बिका भवानी तेरी ऐसी सरकार हैं ॥ ९ ॥

हद हो गई, माधवराम ने तो सभी देवताओं को शक्ति की सरकार के नौकर बना दिये । छोटे से छोटा या बड़े से बड़ा कोई भी देवता ऐसा न रहा जो शक्ति के यहां किसी काम पर नियुक्त न हो । जिस पवन के एक ही झकोरे में संसार हिल जाता हैं वह शक्ति के यहां झाड़ू देता है । जो अग्नि अपने एक ही स्फुलिङ्ग (चिनगारी) से सबको भस्म कर सकता है वह शक्ति के यहां चूल्हा जलाता

है और विचारी मेघमालाएं तो शक्ति के यहां पानी पाँडे हैं। फिर सूर्य चंद्रादि मशालची हों, पंच भ्रेत ढोलनी के पहरायत हों और कल्पवृक्ष बाग़ की बाड़ हो तो कौन बड़ी बात है।. परन्तु ऐसा करने में भी माधवराम की धृष्टता नहीं, उन देवताओं का ही महत्व है जो शक्ति के सहारे से संसार का उद्धार कर रहे हैं, अस्तु।

दूसरा प्रकरण

भक्तिप्रकाश का दूसरा प्रकरण भक्तवर माधव ने भक्तों के लिये ही रिजर्व किया है, इसमें केवल भक्तमाल है। परन्तु यह कमाल किया है कि २ ही पद्यों में प्रमुख भक्तों का दिग्दर्शन करा दिया है। पद्य ये हैं—

(मनहर)

कुल औ अकुल दोऊ मेलवे की रीति जानै,
ताको नाम कौल शिव ग्रंथन में गायो है।
महानन्द मंगल प्रह्लादनन्द विश्वनाथ,
नन्द चिदानंद ज्येष्ठ नाथहू बतायो है॥
विश्वेश्वर पृथ्वीधर लघुविद्यारण्य पुनि,
नाम कुलाचार्य एते जग में कहायो है।
ऐसो कौल परम धर्म ताके परे धर्म नाहिं,
तामें एते कौलकान पर्म पद पायो है॥१०॥
तेरे जू अगम पन्थ तिरे हैं अनन्त सन्त,
तिनकी तो नाम संख्या काहूना गिनाई है।
ऐयें मरुदेश बीच जे जे सन्त तारे देवी,
तिनकी तो भक्तमाल ऐसे जग गाई है॥

रूपांदे रु मल्लिनाथ मेह वे विख्यात भये,
जाकी जात परसिवे कों दुनी सब आई है।
बावा श्री गुसांई ताकी महिमा थल देश मांहि,
वाही के प्रसाद इन परम सिद्धि पाई है ॥११॥
रामदेव धारू मेहो उगमसी रणसी हू,
हर्भू आदि साधु एते प्रेम भक्ति बीधे हैं।
तोळादे जैसळ कच्छ देश में कहाये पीर,
कुत्बुद्दीन धीरशाह याही राह गीधे हैं ॥
केते नरनारी भोग मोक्ष अधिकारी भये,
केतेहू संसारी ऋद्धि सम्पत्ति में रीधे हैं।
ऐसो असिधार परम गहन अपार पन्थ,
ताके मग लागि के अनन्त साध सीधे हैं ॥१२॥

इनमें कई एक ऐसे भक्त भी गिनाये गये हैं जिनके नाम, धाम और काम अबतक अज्ञात हैं। किन्तु यह सब कुछ कहने पर भी सुनाई न हुई तब तीसरे प्रकरण में माधवराम ने स्तुति, महिमा और शिकायत तीनों का मिश्रण कर दिया। पढ़कर अनुभव कीजिये घी, मिश्री और गिलोय तीनों का मिलान है।

तीसरा प्रकरण

(मनहर)

जै जै विन्दु नादिनी आह्लादिनी शिवादि सुर,
तेरे वर विष्णु संज्ञा पायी करतार की ।
तेरी ही कृपा तें लच्छिपति कच्छरूप धार,
रतन निकार खारी वारिधि की बार की ॥
तेरी ही कृपा तें हरि मच्छ औ वराह रूप,
पैठ कें पताल वेद अवनी उधार की ।
खड्ग चक्रधारी देवी ! देवन की हितकारी,
कहा धों विचारी जो हमारी बार बार की ॥१३॥

तेरे वरदान द्विज राम वैसे काम कीन्हें,
राम सेतु बाँधी कपि लंका बार छार की ।
दीनन को राज गज वाजि दै पयादन को,
भक्तन का लाज सों जहाज पारावार की ॥
बन्ध मोक्ष दैनी तू दया अरु कृपा की श्रेनी,
खल को कृपान पैनी तारन संसार की ।

मैं तो निराधार तातें टेरत हूं बार बार,
कौन धों अवार जो हमारी बार बार की ॥१४॥

दियो वरदान चित्रगुप्त को उजैनी बीच,
पद्म पुरान में है कथा विस्तार की ।
माण्डव को श्राप त्रयलोचनी विमोच कीन्हों,
पाई है बड़ाई धर्मराज अधिकार की ॥
होय के प्रसन्न वर देनी ऐसो वर दीन्हों,
तेरे वंश अंश पै मुदार राज द्वार की ।
ऐसी भाँति कायथ की कौम को निवाजी तुम,
भई कहा सूम जो हमारी बार बार की ॥१५॥

रूपांदे सु रानी जाकी जग में कहानी भई,
रावलहू मानी मन बात अविचार की ।
थार बीच खान पान ताके फूल पान करे,
मनोकाम सरे पत राखी वह नार की ॥
जहाँ जहाँ भीर परी तहाँ तहाँ भीर करी,
तूही जगतारन आधार निराधार की ।

रात दिन टेरी तोहू सुनी ना गुहार मेरी,
डारी का अँधारी जो हमारी बार बार की ॥१६॥

माधवराम कहते हैं कि पाताल में पैठने, वेदों के लाने, सेतु बंधवाने, लंका को बिगड़ाने, ग़रीबों को सब कुछ दिलाने और रूपादे के मद्य मांस को फूल पान बना देने आदि में तो तू उदार और विचारवान् बनी हुई थी किन्तु हमारे लिये सूम बन कर देर कर रही है, यह अच्छा नहीं।

(मनहर)

एक कोऊ वैश्य धनधारी अतिभारी तिन,
वारिधि में डारी ही जहाज भर भार की।
टूटो बादवान तब भौंरन के भौंर बीच,
पौन की झकोर वाकी नौका माँझधार की ॥
हा! हा! जगदम्ब! ऐसो नाम ले पुकार्‌यो जब,
दयानिधि! वेग देकें बेरी वाकी पार की।
तब तो तू ऐसी दौरी अबैं भई कहा बोरी,
करी कहा चोरी जो हमारी बार बार की ॥१७॥

इनके लिये तू ऐसी दौड़ी थी कि बात की बात में उनके संकट मिटा दिये थे और अब ऐसी लँगड़ी हो गई जो हमारे लिये देर कर रही है।

(मनहर)

कष्ट दुःख भञ्जनी औ खण्डनी दुरित द्वन्द्व,
सुरन के ओट जोट कौनसे दातार की।
आठ सिद्धि नवनिधि छिनमें बखसि देत,
रङ्क करै राव कछु बात न उधार की॥
सागर की बात देश देश में प्रसिद्ध भई,
टेरत ही धाई निज जनन वहार की।
देवि वहुनामी! हम चाकर सुदामी तेरे,
परी कहा खामी जो हमारी बार बार की॥१८॥
ओसियाँ नगर वासी ब्राह्मण अचल नाम,
पर्यो हो लाहौर बीच क़ैद कोटवार की।
साँची सिचियाय फुरमाय दयो भैरव को,
काँधे लेकै धायो राह गही मारवार की॥
रैन को उतार्यो तत्काल वाके द्वार बीच,
दूर ते बतायी ओर वाके घर बार की।
तब शिवरानी! हम जानी तू अयानी ही पै,
भई का सयानी जो हमारी बार बार की॥१९॥

आयो हो हुसेनअली भई चलाचली अति,
सुधि नाँहि रही कछु देश मारवार की ।
खीमसी भण्डारी व्रतधारी जान्यो भूप तब,
दई परधानगी मुदार सरकार की ॥
देवी ! तेरे जापके प्रताप तैं भँडारी जब,
यवन निकार मेटी चिन्ता वर्ण चार की ।
ऐसी महामाय इम भक्तन के आई भाय,
यहै कौन न्याय जो हमारी बार बार की ॥२०॥

फतेसिंह कायथ भिवानी जोधनेर वासी,
सेवक परम तेरो अर्चा निराधार की ।
साँभर नगर मध्य म्लेच्छन के हाथ पर्‌यो,
राखलियो देवी ! तब दया बेशुमार की ॥
खलन की भच्छनी औ दीनन की रच्छनी त्यों,
टारन अकाल-मृत्यु विसम जुवार की ।
शंभु घर नारी ! औ गनेश महतारी ! कहा,
करी गुनेगारी जो हमारी बार बार की ॥२१॥

सुन्यो है पुरानन में सन्तन के काज तुम,
देवी ! गिरिनन्दनी ! जू सिंह चढ़ि धावती ।
रैवासा सों रमी सौनवायहू को तजी सुनी,
ओस्याँ हू ते भजी जानो ऐसी मन आवती ॥
साँभर सें सटकी त्यों भटकी फिरत कित,
फलोधी में होती तो तूँ कैसे अलसावती ।
सूँधा तें सिधाई औ पलाई खेजड़लाहू ते,
देशमें जो होती तो हमारी बेर आवती ॥२२॥

नग्रकोट बीच नाँही नाँही काँगुरा के माँहीं,
जानो हो सिधाई काहू ठोर मनभावती ।
धौलागिरि विन्ध्यागिरि हेमगिरि छाँड दयो,
मानो धाम कियो नयो जैसो चित चावती ॥
जेजे सिद्ध-पीठ तहाँ दीठ न परत कहुँ,
अन्तरिच्छ गच्छी मरुदेश में न पावती ।
चंडी जगमंडी गई जानी पर खंड सही,
भरतखण्ड होती तो हमारी बेर आवती ॥२३॥

देवी ! तू इस प्रकार के काम करने वाली होकर भी हमारे लिये देर कर रही है, यह न तो न्याय है और न हमने तेरी चोरी की है। संभव है उनके समय में तू अयानी (बावली) थी और अब सयानी हो गई है। हमने पुराणों में सुना था कि तू संतों के लिये सिंह पर चढ़ कर दौड़ती है। मगर अब हम देख रहे हैं कि या तो तू लँगड़ी हो गई या रैवासा, सौनवाय, ओस्यां, सांभर, फलौदी और सूंधा आदि मकानों को छोड़ कर कहीं चली गई है। न नग्रकोट में है, न कांगड़े में है। धवल, विन्ध्या और हिम-गिरि आदि में भी नहीं दीखती। संभव है भारतवर्ष के सभी स्थानों को छोड़ कर तू आकाश में चली गई है। कदाचित होती तो हमारे लिए अवश्य आती।

(मनहर)

ऐरी महामाय ! तोकों कहत दिवाय सौंह,
ऐसी भाँति कैबे वारो मोसो कोऊ दास ना।
[illegible] त्रिशूल निरमूल कीन्हें दैत्यन कों,
नहीं कोऊ ग्रन्थ जामें तेरो इतिहास ना ॥
वेद तोकों गाई सरनाई की सहाई तातें,
तेरी करैं सेव आन देव विसवास ना।

मोसो दास खास जो न क़ैद सों खलास कीन्हों,
जग में न तेरी कोऊ करैगो उपासना ॥ २४ ॥

बेर बेर टेर टेर तेरी ओर हेरत हूं,
इतनों अंधेर तेरें कोलों ठहरायगो ।
दीनन की सोध नाँहि सोध परबोध कहां,
कलिको चलन मनु तेरे मन भायगो ॥
मेरो कष्ट हरिवेकों करत विलम्ब देवि !
तोहि भक्तवत्सल यों कौन जग गायगो ।
बन्ध मोक्ष मेरी जगम्ब ! जोपैं करी नाँहि,
मेरी तो सहल पै तिहारो विर्द जायगो ॥२५॥

(दोहा)

तब तो तनक गुहार सुन, धावत ही जन काज।
अब तजिकैं मरुदेश मनु, गई कैद-भय भाज ॥२६॥

इस भाँति अनेक प्रकार से कहने पर भी कुछ न सुनी, तब माधवराम ने शक्ति को सपथ दिलादी और नाराज़ होकर कहने लगे कि—अगर तू मेरे जैसे खास दास को भी खलास न करेगी तो तेरी उपासना कौन करेगा । बड़ी

अंधेर है ग़रीबों की भी कोई सोध नहीं । हम जान गए अब तू भी कलजुगी चाल चलने लग गई है । हर बात में चालाकियों से काम लेती है । खैर मैं तो सहजाऊंगा मगर तेरी महिमा घट जायगी । इस प्रकार भरपेट उलहना देने के पीछे माधवराम ने चौथे प्रकरण में करुणा-पूर्ण शब्दों में कहना आरम्भ किया—

चौथा प्रकरण

(मनहर)

जुग जुग बीच जगरानी ! है कहानी तेरी,
करी है सहाय सन्त लाखन हज़ार की ।
कहां लौं गिनाऊं नाम जिनके जु पूरे काम,
विगत बतावतहूं निज उपकार की ॥
गिरी अधरात छात गह्यो हाथ मेरो मात,
वलि बलिहारी में तो सरजनहार की ।
वैसी भाँति राख्यो हो तो अबहूं बचाय लीजे,
करिये बहार मेरे जनम सुधार की ॥ २७ ॥

तेरे बसें बास औ उपासना हूं तेरी हमें,
तू ही सुखराम विश्वास आस तेरिये ।
तेरे दास खास जान करें उपहास जग,
आस पास बांध आसपास जिन फेरिये ॥
विघनविनाशिनी प्रकाशनी विमल बुद्धि,
कटक की नासनी ! ये संकट निबेरिये ।

कहै माधोराम तूं अनाथन की नाथ देवी !
कृपा की कटाक्ष सों हमारी ओर हेरिये ॥२८॥

राखे देव दैत्यनसों बखान पुरानों बीच,
सुन के कथान मन मेरो अभिलाखिये ।
राख्यो ब्रज मेह बीच पाण्डु लाखा गेह बीच,
पक्षी सुत घण्टानल व्यासवैन साखिये ॥
औरहू अनन्त सन्त राखे महा संकटतें,
है तो बात सत्य ये ? असत्य नाहीं भाखिये ।
जैसी परतीत है जहांन बीच वाही रीत,
कृपा का कदम्ब जगदम्ब मोहि राखिये ॥२६॥

मैं तो महापापी आपथापी औ सुरापी हों पै,
तू है पापमोचनी जू विर्दना विसारिये ।
छोरे हैं कपूत तोहू माता प्रतिपाल करे,
दयानिधि ! करुणा कै ऐसी चित धरिये ॥
तेरे ही कहावैं और जांचबे को कहा जावैं,
बेर बेर पल पल तेरे पायँ परिये ।

कहै माधोराम कुर्सीबन्ध हैं गुलाम तेरे,
बेरी काट डारो मेरी बेरी पार करिये ॥ ३० ॥

हे दयानिधि ! मैं महापापी आपथापी और सुरापी हूं और तू पापमोचनी है बेटे कपूत होजाते हैं तो भी माता उनको पालती है । अतः तेरे सिवाय अब हम कहाँ जावें । हम तो तेरे कुर्सीबन्ध (वंशपरंपरा के) गुलाम हैं इसलिए ये बेड़ियां काट के मेरा बेड़ा पार कर ।

(सवैया)

मोपर ऐसी बनी जननी सुन,
कौन धनी बिन तोहि हमारो ।
कै जिन बेरो सुनो मम टेर,
कृपा कर लोचन-कोर निहारो ॥
संकट की हरनी धरनी शिव,
तोसो दयाल को ? मोसो बिचारो ।
श्री जगदम्ब ! कृपा कि कदम्ब !
दया करिके दुख-सिन्धु ते तारो ॥३१॥
और की चाह न राखत हों कछु,
मोहि भरोसो है तेरो घनेरो ।

मेरो अली मन को निसवासर,

तो पदपंकज वीच वसेरो ॥

साँझ की बेर यहैं गिरिनन्दिनि !

संकट को जगदम्ब ! निवेरो ।

बालक की प्रतिपालिका ! कालिका,

तेरोहूँ तेरोहूँ तेरोहूँ तेरो ॥ ३२ ॥

हे जगदम्बा तेरे जैसे दयावान और मेरे जैसे ग़रीब और कौन हैं । और यदि हों भी तो दूसरों की मुझे चाह ही क्या है ? मुझे तो ज्यादा भरोसा तेरा ही है । मैं कुछ ऐसे संकटों में फँस गया हूं कि तेरे बिना दूसरा कोई निस्तार नहीं कर सकता । देख तो—

(कवित्त)

एक ओर व्याध सर सांध लाग्यो घात वीच,

एक ओर भई गति पावक जरन की ।

एक ओर स्वान मग रोक रह्यो भागवे को,

एक ओर जाल-घात मृग के मरन की ॥

पावक बुझाई घन स्वान स्यार धाये बन,

टूटो गुन जाल पौन मोक्ष यों हिरन की ।

वैसी भाँति मोहिको बचाय लीजे त्रिपुराय,
गही है सरन अम्बे ! रावरे चरन की ॥२३॥

उस हिरन के लिए कैसे संकट का समय था जिसमें एक ओर तो वधिक सर साँधे खड़ा था। दूसरी ओर आग जल रही थी। तीसरी ओर खूंखार कुत्तों ने भागने की राह रोक रक्खी थी और चौथी ओर जाल लगा हुआ था। मगर ये सब आपदायें तूंने वर्षा के एक ही उपाय से हटा दीं और हिरन को भागने का मौका दिया। ऐसी दशा में मुझे निकाल देना तेरे लिए कोई मुश्किल नहीं। मुश्किल मेरे लिए है। क्योंकि—

(कवित्त)

वृद्ध भई देह खायवेकों नाहिं गेह बीच,
होत अति पीर बवासीर को अजार है।
प्यादे उनमादे सो तलब हेत देत दुःख,
विना रोज लीन्हें रोकें पानी औ अहार है॥
सबैं आपस्वारथी न बात परमारथ की,
पाप के महारथी सो लोपी धर्मकार है।
ऐसी जलाजंध अन्धाधुन्ध व्यवहार बीच,
बार बार मेरी जगदम्ब सों पुकार है॥ २४॥

(सवैया)

बालपनैं प्रतिपाल करी हम,
जानि सही तूँ गरीबनिवाज है।
तारुन में तनु तापहरी तुम,
मेल दये सब ही सुख साज है॥
भीर परें जन पें जननी जब,
होय दयाल सुधारन काज है।
तैं जु निहाल कियो सब हाल में,
(अब) वृद्धपने हूं की तोहि को लाज है॥२५॥

अब तूही सोच मैं कैसा दुखी हूं।

(कवित्त)

माया है अनन्त तेरी तेरो ही स्वरूप विश्व,
तू ही लोपामुद्रा वृन्दा तनया द्रुपद की।
तू ही कलानिधि शची ब्राह्मी होय सृष्टि रची,
तू ही दैत्यदारनी अहारनी है मद की॥
सन्त की सहाय माय! वैसी भाँति करो आय,
करी ही सहाय जैसे ग्राह ते दुरद की।

मेरे करतूतन की ओर जिन हेरो देवी !,
हेरिये जू ओर अम्बे ! रावरे विरद की ॥३६॥

हमें तुम्हें नांतो ताको राख लीजे तांतो देवि!
करिये न नां तो बात यही चित्त धारनी ।
मैं तो हूँ अधम पापकर्म ही को कारक हूँ,
तू है पापहारनी औ अधम उधारनी ॥
मैं तो हूँ अधम मग्न विपति के बारिधि में,
तू है दाता सम्पति का विपति विदारनी ।
मैं हूँ महा धूत औ कपूत पूत पूतन में,
तू ही तात मात है भवानी! भव-तारनो ॥३७॥

सो ही भूप धर्मरूप दीन दया चित धारै,
यही रीति नाति वेद स्मृतिन कथा की है ।
मन्त्री सतबादी बैठैं राजस की गादी तब,
दीनन की सोध राखैं ये ही रीत वाकी है ॥
लीक दोय न्याय की हैं सो तो नष्ट भई लखी,
कैसे जियें दीन जीव बस्यो आय नाकी हैं ।

तातें तोहि ताकी तूँ हैं नउका कृपा की देवि,
दयानिधी ! एक तेरी दया लीक बाक़ी है ॥३८॥

भक्तन की पालिका भवानी महाकालिका जु,
जुग जुग अन्त तैं अनन्त कृपा कीनी है।
भई अनावृष्टि तबैं कन्द साक पोषी सृष्टि,
शाकंभरी खरी इहिं भांति दया चीन्हीं है॥
सुरन की नेक जब श्रवन में घोर परी,
करुणानिधान कैसी करुना में भीनी है।
बन्ध मोक्ष देवो जगदम्ब ! है कि नीक बात,
तैं तो वैश्य सुरथ को भक्ति मुक्ति दीन्हीं है॥३९॥

देख तो माँ तेरा और मेरा क्या नाता है। उसका ताँता मत तोड़ देना। यदि नाँ कर देगी तो ठीक न होगा। मैं महा-अधम धूर्त और कपूत हूं परन्तु तू विपत्तियों को विदारने वाली और भवसागर से तारने वली है।

(कवित्त)

दिल्ली बीच चाकरी करी सो पाई काँकरी नां,
वा करीहू मेहनत औ घर बरबाद है।

चुगल औ चारन को भयो अधिकार अति,
भये इतवार बिन जेते खानाज़ाद हैं ॥
आछे आछे काम कीन्हें साह पास दाम लीन्हें,
साँम धर्म चीन्हें पै न पाई कछु दाद है।
एते पर पाय बेरी डारी तब तोहि टेरी,
एरी जगम्ब ! मेरी तोसों फरियाद है ॥४०॥

जगदम्बा ! तू इस ज़माने की खूबी तो देख कैसा अनर्थ है। मैंने घर-बार बरबाद करके दिल्ली में जो चाकरी की उसकी एक काँकरी भी मुझे नहीं मिली। यहां हम लोगों पर विश्वास ही नहीं, चुगल और चारण अधिकारी हैं। बादशाहों के समीप में रहकर मैंने अच्छे काम किए, इनामें लीं और स्वामी को पहचानता रहा परन्तु कभी शाबास नहीं मिली। इतने पर भी अब पावों में बेड़ियां पड़ी हैं। इसीलिए तो मैं तुझे पुकारता हूं। क्योंकि मेरी तो तेरे ही पास फ़रियाद है।

(कवित्त)

भयो वर्ष साठ को मैं भोजन अछूत भख्यो,
सो अब छुवत अन्न अन्त्यज चंडाल है।

खट-पदी खटमल खाए जात देह अरु,
न्हायवे को जाग नांहि बढ़े तन वाल हैं ॥
छूटत है हिम्मत विपत घर घेर रही,
मेरे तेरो नाम सो ही सदा धन माल है।
कृपा की कदम्ब ! जगम्ब ! क्यों विलम्ब कीजे,
बन्ध मोक्ष दीजे देखो मोपे ऐसो हाल है ॥४१॥

अम्बा ! मैं साठ वर्ष का होगया। कभी किसी का छूआ भोजन नहीं किया था। मगर इस जेल में मेरे अन्न को महतर भी छू लेते हैं। खाट में इतने खटमल हैं कि सारे शरीर को खागए। नहाने का कोई संजोग ही नहीं। फिर हजामत तो करे ही कौन ? शरीर में वाल बढ़गए हैं दाढी मूँछ सब एक हैं। ऐसे वेहाल होने से ही मेरी हिम्मत छूट रही है, अब तू देर मत कर और कैद से छुड़ा।

(कवित्त)

दम्भी महा क्रूर अति दूर साधु संगत तैं,
जानत न तप नेम नाम को न जापी हों।
कबू धर्मशाला औ देवाला में न कथा सुनी,
मिथ्यावादी धूत दूत ठग को मिलापी हों।

लालची लबार मद क्रोध अहंकार भर्यो,
चित के चहन चल्यो ऐसो आपथापी हों।
एपैं जगदम्ब ! तेरे चरन अवलम्ब रह्यो,
तू तो पापमोचनी है जो मैं महापापी हों ॥४२॥

जगदम्बा ! मैं झूठा, लबारी, लोभी, लालची, कामी, क्रोधी, अहंकारी, धूर्त और ठग सभी कुछ हूं, परन्तु मैंने तुम्हारे चरणों का आश्रय ले लिया है। अतः तू मेरे सब पाप दूर कर।

(मौक्तिक दाम)

अहो जग-जात ! सुनो जन बात,
अहो जगदम्ब ! करो न विलम्ब।
अहो मुनि गावत तोहि दयाल,
कृपाल कृपाल कृपाल कृपाल ॥४३॥

भवानि ! तुही भवतारन सन्त,
सु गावत ईश हरी इक दन्त।
दया कर देवि ! गहो मम हाथ,
अनाथ अनाथ अनाथ अनाथ ॥४४॥

बिना पय ज्यों मुरझावत मीन,
दयानिधि! तू हि उधारन दीन।
भयो अति संकट तैं तन छीन,
अधीन अधीन अधीन अधीन ॥४५॥

उपरोक्त तीनों छन्दों में माधवराम ने आग्रह के साथ अर्ज की है और साथ ही उस ज़माने के न्याय अन्याय को भी दिखलाया है। आजकल के मुक़द्दमे-बाज़ अथवा न्यायप्रेमी यह कहा करते हैं कि राज-दरबार में कहीं सुनाई नहीं। मुसाहिबों के हाथ में सब काम छोड़कर राजा लोग आराम से सोते हैं और प्राणप्रिय प्रजा कचहरियों में रोती है। मगर वे माधवराम के ज़माने को देखें उसमें आज से कौन बात कम है। उनके ज़माने में भी न ग़रीबों की पुकार पर ध्यान दिया जाता था और न कचहरियों में न्याय होता था। हम तो समझते हैं कि झूँठे, लबारी, धोकेबाज़, अन्यायी और रिश्वत-खोर सभी लोग उस ज़माने में जन्म आए थे और आजकीसी लीला करने लग गए थे। अन्तर यह था कि उन दिनों ये बातें कम थीं और अब बढ़ गईं। अस्तु उनका चित्र देखिए।

(मौक्तिक दाम)

सदा उठि माँगत प्यादेहि रोज,
नहीं धन गाँठ युँ आवत रोज।
सु कौन धनी जननी बिन आहि,
तिराहि तिराहि तिराहि तिराहि ॥४६॥
दयानिधि ! दीनन की सुख धाम,
न जानत हो जन के जु विराम ?
करैं दुख भौन ते कौन आजाद,
फिराद फिराद फिराद फिराद ॥ ४७ ॥
ई देश महा उपज्यो अनरत्थ,
तुहीं जन राखन को समरत्थ।
प्रज्वलित देखि अन्याय की लाय,
बचाय बचाय बचाय बचाय ॥ ४८ ॥

(दोहा)

भक्त-वछल है बिरद तुव, वेद पुरानन साख।
अवलंब्यो तेरे चरन, ज्यौं चाहै त्यौं राख ॥४९॥

सब बातें आज के समक्ष हैं। यह सब कुछ कहने पर भी मनस्तुष्टि न हुई। तब माधवराम ने पाँचवें प्रकरण में "मनःशिक्षा" का समारोह आरम्भ किया। वह कहने लगे कि—

पांचवां प्रकरण

(मनहर)

जाके सुर सरन औ वन्दत चरन मुनि,
निगम हुँ नाँहि गम वाके नर-नारी की।
खगपति बैलपति गजपति मोरपति,
गावैं पैं न पावैं गति जग महतारी की॥
एरे मन बौरे! मेरे काहे को उदास होत,
गरै क्यों न आस अम्बे दास सुखकारी की।
दोय भुज वारो नर शरन बचाय लेत,
गही है शरन मैं तो बीस भुजवारी की॥५०॥

दैत्य-रक्त सोखनी औ पोखनी सकल विश्व,
मेरे अघ पुञ्जन को तोबिन को जारि हैं।
गो मैं अपराधी प्रेम लच्छना न भक्ति साधी,
लोचन कृपाकी कोर मोहिकों निहारि हैं॥
तू तो भक्त-वच्छल त्यौं दीनन की रच्छक है,
येही मोहि आसरो विरद चित धारि हैं।

अहा जगदम्ब ! तू है कृपा की कदम्ब तातें,
जानत हों मोहि भवसागर तें तारि हैं ॥५१॥

यही है उपाव जगदंब की शरन आव,
गावत निगम वाको दया को सुभावरे ।
नेक जू कृपा की अवलोकन निहाल करै,
ऋद्धि सिद्धि देत रु करत रङ्क रावरे ॥
जन जन जाँचवे की बान तज वाको भज,
ध्यान पद-कञ्ज धर बन्यो नीको दावरे ।
नरन सों बोल बोल खोत कहा मोल तोल,
होत कहा डामांडोल मेरे मन बावरे ॥ ५२ ॥

जैसे मीन नीर बाल क्षीर पीर वारो बैद,
चंदहुँ चकोर घन चातक रहैं चहैं ।
चन्दन उरग अलि पंकज औ कञ्ज रवि,
दीपक पतंग अंग चाहत सदा दहैं ॥
चुम्बक कों लोहमोह मृग कों सुराग बीन,
कामिनी कों कंत धन निर्धन सदा लहैं ।

मोर घनघोर चहैं सीप स्वाति और जैसे,
तैसे मन मेरो तेरे चरन सदा रहैं ॥५३॥
दीनन दयाल प्रतिपाल निज सन्तन की,
करत निहाल दू जो दाता कौन तोसो है।
काम क्रोध लोभ मोह मद में मगन सदा,
महा शठ कूर अपराधी कौन मोसो है॥
मेरे कर्म घोर जन्म जन्म के हैं कोर कोर,
कहाँलों गिनाऊं यह दफ्तर घनोसो है।
शंकर की रानी! ठकुरानी! तीन लोक मानी,
अम्बिका भवानी! तेरी कृपा को भरोसो है॥५४॥

(सवैया)

खलु जानत हों परताप जु जाप को,
पाप सन्ताप हरैं हि हरैं।
जगकी जननी जग पालक है सु,
कपूत को पेट भरैं हि भरैं॥
सब नाम लिये परिणाम लहैं सुख,
संकट व्याधि टरैं हि टरैं।

चित चाह यही गुन गावत हों नित,
अम्बा सहाय करैं हि करैं ॥५५॥

देखा--माधवराम ने कैसी उत्तम रीति से मन को समझाया है। अब तक बेड़ियां कटवाने के लिए छटपटा रहे थे। परन्तु अब ऐसे शांत होगये कि उस बात को याद तक नहीं किया। छठे प्रकरण में उन्होंने वीररस का भाव दिखलाया है। ठीक ही है मन को जब अपनी इच्छापूर्ति का आग्रह नहीं रहता है तब उसमें वीरता का उदय हो आता है। माधवराम कहते हैं कि—

छठा प्रकरण

(कवित्त)

तब शिवदूती ! तुम शेर पै सवार होय,
शुम्भ औ निशुम्भ को विडारे इक ताल में ।
मर्दन तैं कीन्हों मधुकैटभ महिष हू को,
लीन्हे चण्ड मुण्ड देवी वदन कराल में ॥
छिनक में धूम्रनैन धूरमें मिलाय दीन्हों,
रक्त वीज रक्तपान कीन्हों तत्काल में ।
कलि खल मारबे कों फिरै काहि ऐंठी ऐंठी,
कन्दरा में बैठी किधौं पैठी हो पाताल में ॥५६॥
सिंह भयो नष्ट ? अष्टभुजा का अनायुध हैं ?,
कीनों कहा श्रम जातें अंग अलसाती हो ? ।
भैरव कराल विकराल अति कालका जू,
तोकों तजि भाज्यो जानों तातैं अनखाती हो ॥
प्रजा भई पीड़ित न ताकी पीड़ हरत जु,
कानन में रुई दई किधों मदमाती हो ।

देखती हो खल मिल देत दुख दीनन कों,
तो उन उदित होत गई किये जाती हो ।।५७।।

(सवैया)

संत सहाय करी महँमाय,
हने बहु दैतन के दल जाड़ा ।
मेरिहु बेर करो न अबेर,
करों बिनती कबहूँ कहि ठाडा ।।
तारन विर्दकों धारत हो कि,
तुम्हीं वह विर्द सबैं अब छाडा ।
आज भई मतवारि घनी कि,
दये दोऊ कुंडल कानन आडा ।।५८।।

हे शिवदूती ! जिस शेर पर सवार होकर तू शत्रुओं को मारती है क्या वह शेर नष्ट होगया । अथवा कानों में रूई टूंसली । या सम्भव है और कुछ काम कर आई जिससे अलसा रही है । खैर अब आलस्य को छोड़ और दुष्टों को मार, अस्तु । सातवें प्रकरण में माधवराम ने कुलदेवी के प्रति विश्वास-भाव प्रकट किया है । इसमें दश पद्य हैं । उनका सार यह है—

सातवां प्रकरण

(दोहा)

अम्बे ! तव पद कमल में, सदा रहै मम ध्यान।
जन्म जन्म तेरी भगति, यहि मांगूँ वरदान ॥५६॥
तथास्तु ।

आठवां प्रकरण केवल प्रार्थना का है। उसका आरंभ इस प्रकार हुआ है—

आठवां प्रकरण

(सवैया)

जग विघ्न-विनाशक की जननी,
तुम हो अरधांगिनि शंकर की।
अब और पुकार कहा कहिये,
तुम जानत हो घट अन्तर की ॥
मुहि पै सु दया तुम ऐसी करी,
विपदा जु हरी लोह लंगर की।
द्रुत बन्धन मोक्ष कर्यो जगदम्ब जु,
और चित्यो इन किंकर की ॥६०॥

भुजंगप्रयात

नमो ज्योतिरूपा नमो विश्वमाता, नमो जग्तकारन नमो विश्व ताता।
नमो ब्रह्म-विद्या नमो वेदवानी, सदा जै सदा जै सदा जै भवानी ॥१॥
तुही योगनिद्रा तुही योगयुक्ता, तुही अंबिका कालिका भोगभुक्ता।
तुही पौन आकाश भू तेज पानी, सदा जै सदा जै सदा जै भवानी ॥२॥
तुही वैष्णवी नारसिंही सुरेसी, तुही घोर रूपा तुही मुक्तकेसी।
तुही पर्मगुह्या तुही सर्वजानी, सदा जै सदा जै सदा जै भवानी ॥३॥
तुही दैत्य दानों तुही देव-वर्दा, तुही पद्म आसन तुही पर्म पर्दा।
तुही पर्म शक्ती परापर बखानी, सदा जै सदा जै सदा जै भवानी ॥४॥
तुही मर्दि भैंसा तुही शंभुतीया, तुही पर्म सिद्धा तुही है तुरीया।
तुही धर्म कामार्थ औ मोक्षदानी, सदा जै सदा जै सदा जै भवानी ॥५॥
तुही राधिका साधिका सर्वकामा, तुही रुक्मिणी देवकी सत्यभामा।
तुही मोहिनी रोहिणी नंदरानी, सदा जै सदा जै सदा जै भवानी ॥६॥
तुही शारदा वारदारूप भासै, तुही विश्व-पालै तुही विश्व-ग्रासै।
तुही दानवी मानवी देवज्ञानी, सदा जै सदा जै सदा जै भवानी ॥७॥
तुही सृष्टिकर्त्ता तुही कष्टहारी, तुही वृद्ध यूवान कन्याकुमारी।
तुही लक्ष्मि-रूपा तुही राजरानी, सदा जै सदा जै सदा जै भवानी ॥८॥
तुही मानवी तेजरूपा प्रकाशी, तुही शांकरी गौरि कैलासवासी।
तुही जाह्नवी रूप भो पाप हानी, सदा जै सदा जै सदा जै भवानी ॥९॥
तुही कामिनी ब्राह्मनी वेदवाची, तुही आसुरी किन्नरी औ पिशाची।
तुही वैल-वाही तुही शूलपानी, सदा जै सदा जै सदा जै भवानी ॥१०॥
तुही भक्तवत्सल तुही संततारी, सवैं विघ्न बाधादि संकट निवारी।
तुही सर्वव्यापी सवै लोक मानी, सदा जै सदा जै सदा जै भवानी ॥११॥
जपै दोय कर जोरि के दास माधो, करो नेहदृष्टी हरो कष्ट वाधो।
गही शर्न तेरी दया ठोर ठानी, सदा जै सदा जै सदा जै भवानी ॥१२॥

माधवराम की इस भक्तिपूर्ण प्रार्थना से प्रसन्न होकर भगवती ने वन्ध मोक्ष कर दिए थे और उनकी बेड़ियां खुलादीं। इससे सन्तुष्ट होकर माधवराम ने शक्ति की भुजंग-प्रयात के १२ छंदों में स्तुति की। उनमें देवी के प्रायः सभी चरित्रों का आभाप आगया है। उनके आगे निम्न-लिखित भावना प्रकट की है।

(कवित्त)

मेरी चित्तवृत्ति निज चर्नन में राखो नित,
दीजिये सुभक्ति पाप कर्म तैं डरयो रहूं।
होय कैं कृपाल मोह जाल तैं निवेरो देवि !,
पाय कैं विवेक ज्ञान ध्यान में भरयो रहूं॥
क्रोध लोभ मच्छर के अच्छर समेट डारो,
जगत जंजाल इन्द्रजाल तें टरयो रहूं।
टेरत हूं बार बार फेरो जिन द्वार द्वार,
ये ही उपचार तेरी पोर पै परयो रहूं ॥६१॥

कैसी उत्तम भावना है। भवसागर से पार होने में जितने प्रकार के स्वाभाविक दोष वाधा डालते हैं उन सबके निर्मूल होने के लिए माधवराम का यह कवित्त अमोघ

अस्त्र है और साथ में नीचे का सवैया निर्दोषी होने का साधन है। माधवराम ने साफ़ कह दिया है कि—

(सवैया)

पूजन पाठ को ठाठ न जानत,
साठ घरी सठ-पाठ पढ़े हैं।
जाप अलाप सँलाप न आवत,
पापन के अति पुञ्ज बढ़े हैं॥
प्रान अयाम औ न्यास मुद्रादिक,
ध्यान समाधि में नाहिं मँढ़े हैं।
जानो ज्यों पार उतारो दयानिधि,
देवि! तिहारि जहाज़ चढ़े हैं॥ ६२॥

(दोहा)

तरुन कहा बालक कहा, कहा वृद्ध मति धीर।
मैया मैया कहत हैं, जबैं होत तन पीर॥६३॥
पूतन बीच कपूत पर, होत हेत अति मात।
सदा पोस पालन करत, कथा जगत विख्यात॥६४॥

माधवराम की स्तुति, प्रार्थना या उपालम्भ सभी शिक्षाप्रद और लाभदायक हैं। प्रत्येक उक्ति में सद्भा-

वनाओं का समावेश हुआ है । इनके पठन-पाठन और मनन करने से मनुष्यों का कल्याण हो सकता है । शक्ति-भक्ति प्रकाश की समाप्ति में माधवराम ने भी इस बात को स्वीकार किया है । इसके पीछे "करुणा-बत्तीसी" है । उसके ३२ छन्दों में कविवर ने भगवती की तरह भगवान् को भी सब कुछ कह दिया है । दीन होने, करुणा करने और हिम्मत बहादुर बनने आदि की इसमें भी कोई कमी नहीं है । अनेक जगह ईश्वर को लताड़ भी दिया है । भक्त ही तो हैं । जो चाहैं सो करैं । दयालु प्रभु को शाबास या उलहने सभी सुनने पड़ते हैं ।

---:o:---

करुणाबत्तीसी

(मनहर)

गिरि कों उठाय ब्रज गोप को बचाय लियो,
अनल तें उबार्‌यो पुनि बालक मँजारी को ।
गज की अरज सुनि ग्राह तें छुड़ाय दियो,
राख्यो ब्रत नेम धर्म्म पाण्डवों की नारी को ॥
राख्यो गज घण्टातल बालक विहङ्गम को,
राख्यो प्रण भारत में भीष्म ब्रह्मचारी को ।

त्रेता तापहारी निज सन्तन के सुखकारी,
मोहि तो भरोसो भारी ऐसे गिरधारी को ॥१॥

कमला निवास निज दासन की पूरैं आस,
ताके विश्वास विष भख्यो मीरांबाई है ।
केशव कमलनैन सन्तन करन चैन,
सैन हित भये भूप मज्जन को नाई है ॥
इन्द्र जू को हरयो मान सुदामा को दयो दान,
भक्त जान छान नामदेव जू की छाई है ।
नन्द के कन्हाई निज सन्तन को सुखदाई,
भाई बलदेव जू के हमारे सहाई हैं ॥ २ ॥

जैसे खग बालक को राख लियो घण्टातल,
लाखा गेह बीच राख्यो पांडव के साथ कों ।
राख लियो प्रीछत कूं माता के उदर माँहि,
राखे ग्वालबाल गिरि धारयो निज हाथ कों ॥
पारथ के स्वारथ कों सारथी भयें हो प्रभु,
सखा निज जानि कैं जितायो भाराथ कों ।

पावक प्रजारी तहाँ राखी तैं मँजारी को जु,
वैसी भाँति राखो नाथ! मोसे हू अनाथ को ॥३॥

काहू के आधार सेवा वनिज व्योपार को है,
काहू के आधार खेत वित्त थित गाम को।
काहू के आधार विद्या बुध बल बाँह को है,
काहू के आधार हाथी घोरे धन धाम को॥
काहू के आधार हैं जू तात मात बान्धव को,
काहू के आधार यह सार निज वाम को।
मैं तो निराधार मेरी हरि ही करैंगे पार,
मेरे तो आधार एक कोरो हरि नाम को ॥४॥

केते कर्म्मवादी केते अनुभो प्रसादी भये,
केतन की मति भई न्याय सांख्य मत की।
केते यज्ञदान यम नेम को प्रमान करैं,
केते परतीत नहीं तीरथ बरत की॥
केते ब्रह्मचारी केते जोगी जटाधारी भये,
वानप्रस्थ केतन कों दया साँच मत की।

मैं तो हूं पतित मेरी काहू सों न ह्वै है गति,
लक्ष्मीपति ! राखो पति मोसे जू पतित की ॥५॥

केते करैं सेवा केते राखत हैं लेवा देवा,
केते थितवासी ताके खेत हू का हीला है।
केते ही मेवासी केते दान ही के आसी रहैं,
केते ज्ञान ध्यान विखैं विविध रसीला हैं ॥
केते महासूर केते सब गुनपूर धीर,
केते अति बाँके रनखेत में अरीला हैं।
मैं तो अति कूर ताके उद्यम न एको मूर,
जसो मति वारो कारो हमारो वसीला है ॥६॥

केऊ प्रेम लच्छना सुभक्ति में विचच्छना हैं,
नीकी भाँति सेवा करैं जानैं विधि ज्ञान की।
केऊ तत्व बोध सेती आतम को सोध करैं,
साधे नित जोग गति जानैं रोध प्रान की ॥
केऊ तन सासनाँ सों वासना तजन चहैं,
करैं हैं उपासना गनेश शिव भानु की।

मैं तो हूं अजान ताके काहू सों पिछान नाँहि,
कोऊ कछु जानों हूँ तो जानूँ नाथ जानकी ॥७॥

कोऊ ध्यान धारना समाधि विसै लीन भये,
मिलावै प्रमातमा सों आतमा विचारी कों।
केते निसकाम मन अजपा को जाप जपैं,
केते जपैं संकर धतूरा के अहारी कों ॥
केते हू सकाम मंत्र जंत्र आठों जाम जपैं,
भजैं लोभ दाम कों गनेश सुखकारी कों।
तारो वा न तारो एक आसरो तिहारो मोहि,
कोऊ कछु धारो मैं तो धार्यो गिरिधारी कों ॥८॥

लीले हैं अँगार वृजवासिन के हेत सेती,
धनाजू की खेती विन बोये निपजाई है।
भीसम को प्रन अरु द्रोपदी की लाज राखी,
असरन सरन कीर्ति वेदन में गाई है ॥
बूड़त बचायो व्रज कर पर गिरि धारि,
महता नरसी की आप हुण्डी सकराई है।

करिये न वार अब सुनिये पुकार मेरी,
मोपैं ब्रजराज ! गजराज कीसी आई है ॥९॥
दीनबन्धु दयासिन्धु मैटें दुख द्वन्द फन्द,
विरद अनेक ऐसे ग्रन्थन में कहिये ।
मेह तें उवारे गोप बन्ध तें निवारे नृप,
भारत में पार्थहित एते श्रम सहिये ॥
नामदे कबीर गीध गनिका औ कीर तार्यो,
द्रोपदा को चीर बाढि लोक जस लहिये ।
बेरो मँझधार मेरो दुःख वार वारध के,
एहो नाथ ! दयानिधि ! मेरो हाथ गहिये ॥१०॥

(सवैया)

आरत नेक गुहार सुनी तब,
दीनदयाल की रीति खरी की ।
दौरत है तजके निज धामको,
बात सुनी जन भीर परीकी ॥
मेरिहू बेर विलम्ब भयो सो,
कहा तकसीर करी मैं हरी की ।

धाये सवेर सुनी जब टेर,
करी नहिं वेर सु बेर करी की ॥११॥

तादिन टेर सुनी ततकाल,
सहाय के काज तो आप खरे हो।
सन्तन हेत अनन्त अपार जु,
आप सबै अवतार धरे हो॥
मोरि गुहार सुनो नहिं कान सु,
कान्ह कहो किन बान परे हो?
पोढ़ रहे बट पात में नाथ! कि,
बोरे भये कि जरा जकरे हो ॥१२॥

करुनानिधि! कान्ह! सुनों विनती,
सुनिबे के बिना प्रभु! कैसे सरेगो।
दीनदयाल दया करियेजु,
गई करिहो तो पला उघरेगो॥
मोसे कपूत के काम कृपानिधि!,
या जग में कहो कौन करेगो?।

तातें अनाथ को हाथ गहो,
रघुनाथ बिना दुख कौन हरेगो ॥१३॥

(कवित्त)

भक्तन सहाय काज आय ब्रजराज तबैं,
कंस को बिदारयो मत धरी नहिं मामा की।
लाये भर बालद दयाल वा जुलाहे जू के,
गऊ हू जिवाई और छाई छान नामा की ॥
सन्तन को पन राख्यो ग्वालगन बालसेती,
विपत विदारी देकै सम्पत सुदामा की।
एहो बलवीर ! तुम द्रोपदा को बाढ्यो चीर,
हरो क्यों न पीर अब मोसेहू निकामा की ॥१४॥
द्रौपदी की लाज काज द्वारका तें दौर आये,
चीर को बढ़ाय टेक राखी सतसील की।
पुत्र हेत नारायण नाम लेत ततकाल,
काटी जम जाल गति भई अजामील की ॥
मूठी एक चावर के खात ही निहाल कियो,
कैसी दशा भई उन ब्राह्मण कुचील की।

मेरोहू करो सबील होत हो कहा बखील,
तब तो करी न ढील टेर सुनी फील की ॥१५॥

कबको पुकारत हूँ सुनत न एको बात,
एहो नन्दलाल ! तुम कैसे प्रतिपाल हो ?
कहत दयाल सो दया न कहूँ देखियत,
मेरे मन ऐसी आवे नीके पशुपाल हो ॥
धारयो नरसिंह रूप तब प्रहलाद काज,
अब तो न लाज कछु तजी वह चाल हो ।
डारयो तेल कानन ? कै बसे जाय कानन में,
सेंस सैन लेटे ? किधों पैठे पताल हो ? ॥१६॥

बेर बेर टेर टेर जीभहू सिथिल परी,
हेरत न मेरी ओर कैसे अभिमानी हो ।
कृपन भये हो कि धौं मौन ले रहे हो कान्ह !,
दयाहू न आवै अब कहा मन ठानी हो ? ॥
कैसे के उदार तुम होत हो मुरार ! अति,
गोपिन के लार छाछ दधिहू के दानी हो ।

बकि बकि थाकी बानी कछूहू न चित्त आनी,
जानी हम जान बूझ करो आनाकानी हो ॥१७॥

वेद औ पुरानन में करे हैं बखान ऐसे,
सतयुग बीच प्रहलाद ध्रू को तूठे हो।
त्रेतायुग बीच नीच कुल की कान की,
भीलनी के हाथ प्रभु भखे बेर उंठे हो॥
द्वापर के अन्त तुम द्रोपदा की लाज राखी,
पाण्डवन काज दल कैरवसों रूठे हो।
अब कलिकाल में जो करो ना सहाय मेरी,
लोग सब हँस के कहेंगे हरि झूंठे हो ॥१८॥

हमें तुम्हें बनी गाढ़ी अति ही बहस बाढ़ी,
ताको कहो कौनसो निवेरे अब न्यावरो।
टेरतहूं भोर साँझ ताकी परवा न कछु,
जानत हो ऐसे जू बके है कोऊ बावरो॥
मैं तो महादीन तुम नाथ बजो दीनन के,
नाम सो प्रमान अब करो क्यों न चावरो।

विरद् विचारि कै मुरारि मेरी लाज राखो !
मेरी लाज खोयहो तो जैहै ब्रदरावरो ॥ १६ ॥

जदपि बहुत भई तोहू किये जात गई,
सुनो नेक कान देकैं जो है बात तन्त की
करोगे सहाय कबै दुखित भयो हूं अति,
मोपै जदुराय ! आय भई है दुदन्त की ॥
भये हो कठोर ज़ोर किये कहा चालत हो,
नन्द के किशोर ! लाज राखो क्यों न सन्त की।
टेरत हों बेर बेर बेरी भौर मांझ मेरी,
एहो हरि ! तुम्हें काहे खबर बसन्त की ॥२०॥

एहो यदुराय ! हम कहत सुनाय अब,
नीके चित्त धार कर नेक न रिसाय हो ।
हूं तो परयो गैल ताकी किये ही बनैगी टैल,
सबसों बसाए हरि मोसों ना बसाय हो ॥
दयावंत कहावै तो दयालू को काज राख,
मोसो अति दीन तीन लोक में न पाय हो ।

देखत हो घेरयो चहुं ओरतें विपत मोहिं,
करिहो सहाय किधों लोक न हँसाय हो ॥२१॥

(घनाक्षरी)

जगत के स्वामी अन्त्रजामी हू कहावत हो,
हरत न मेरी पीर एते अति कूके पर ।
सुदामा विभीसन कों छिन में नृपाल कीन्हें,
अरिक रहे हो कहा मोसे एक टूके पर ॥
मोपें परी भीर तुम देखत हो विना पीर,
एहो घनश्याम ! घन वृथा खेत सूखे पर ।
करनी सहाय है तो वेग ही सहाय करो,
पीछे कहा होय किये औसर के चूके पर ॥२२॥

(मनहर)

कहा भयो जोपैं तुम द्वारका के राजा भये,
गोकुल के वासी खासी छाछ के पिवैया हो ।
मच्छ कच्छ कवहू वराह नरसिंह भये,
वावन कवहू न आछे स्वाँग के भरैया हो ॥
धेनु के चरैया गुञ्ज माल के धरैया पुनि,
बंसी के बजैया अरु वन के बसैया हो ।

टेरत हूं प्रात रात पूछत न मेरी बात,
जानी हम तात! भृगुलात के खवैया हो ॥२३॥

कंस जू को कंध तोर्‍यो कौरव को वंस बोर्‍यो,
गोपिन को दधि चोर्‍यो बड़े बटमारे हो।
वृन्दा अरु बकी बोरी कुबजा सों प्रीति जोरी,
दान देत बलि बोर्‍यो चोर चीर वारे हो॥
काहू ठाँ कुलीन की सहाय करी सुनी नांहि,
वेश्या कीर गीध भील इनही कों तारे हो।
जरासिन्ध सेती हारे द्वारका पधारे तुम,
काके काज सारे हरि! और के बिगारे हो॥२४॥

गौतम की नारी ताकी कथा बिसतारी बहु,
जद्यपि उधारी हैं पै छिद्र उघरायकैं।
दुशासन द्रोपदी के सभा बीच केश ऐंचे,
तबैं लाज राख लई लाज को गमायकैं॥
भयो बलहीन छीन अति ही अधीन तबैं,
गज की सहाय काज आये तुम धायकैं।

दीन के दयाल प्रभु ! यामें तो सन्देह नाँहि,
करत सहाय होयँ नीके तन तायकैं ॥ २५ ॥
काहू के तो हेत करि खेत निपजाय दियो,
काहू घर प्रीति काज बालद पठाई है ।
काहू के मजूर होय छान ही छवाय दई,
नाई होय नृपति कों आरसी दिखाई है ॥
काहू पै दयाल होय दारद बिडार दयो,
काहू हेत साहू होय हुण्डी सकराई है ।
करत मजाखें जो तो देखत हों आँखैं सब,
कहो हरि ! कहा हम रांड के जमाई हैं
मेरे लिये नाथ ! तुम्हें बात बन आई है ॥२६॥
जानतहूँ भली त्रिध बड़े निवासी होजू,
छल को करैया ऐसो देख्यो कोऊ धूत नां ।
पाण्डुपुत्र हेत कुरुछेत्र में रचायो जुद्ध,
कैरुकुल नाश काज ऐसो कोऊ दूत नां ॥
महा निर्दयी कछु बात ही न जात कही,
यदुकुल बोरबे को ऐसो को सपूत नाँ ।

करते जु पान थन प्रानहू पान को कियो,
पूत नाँही पूतनाँ पुकार मुई पूतनाँ ॥२७॥

ब्रह्मा औ महेश शेष नारद गनेश कहैं,
भक्तन के काज हरि! आप देह धारी है।
मंगल करन दुःख द्वन्द के हरन पुनि,
पोसन भरन ऐसे रटैं नरनारी हैं॥
विर्द भक्तवच्छल सो वेद औ पुरान कहैं,
जानत हों ताको अब खोबे की विचारी है।
द्वारका के बासी भये जात के मेवासी सोऽब,
मेरी ह्वै है हाँसी तामैं हाँसी तो तिहारी है॥२८॥

पीपासम पापी औ सुरापी अजामेल जैसो,
व्याधसो अधम तार्यो अहल्या उधारी है।
राँको बाँको कीर अरु केतक अहीर तारे,
हाथी से हजार पुनि वार नार तारी है॥
कूबरी रैदास पीपा धना नामदेव छीपा,
ऐसे तो अनेक तारे तार्यो नाग कारी है।

अधमा अधम हम तिनकी उधार रही,
अधम उधार ! अब वारी या हमारी है ॥२६॥

एरे मन मेरे ! काहे विकल बिहाल होत,
चतुर्भुज चिंतामनि तेरी चिंत हरि हैं।
धारें धर अम्बर बिसंभर कहावत हैं,
मोसे दीन दुर्बल को कैसे वो बिसारि हैं ॥
असरन-सरन ऐसो विरद धरावत है,
भीर परे भक्तन पैं कैसी भाँति टरि हैं।
बारन की बार कछु करी नांही बार सो अब,
कैसे कैं अवार वे हमारी बार करि हैं ॥ ३० ॥

तुमहो दयाल प्रतिपाल रिछपाल जग,
मैं तो हूं अधीन दीन ऐसी चित्त आनियो।
तुम करतार औ अधार निराधारन के,
मैं हूं निराधार तातैं ऊँची जिन तानियो ॥
तुम जगदीश जगनायक सहायक हो,
मैं हूं बलहीन छीन निश्चय करि जाँनियो।

ऐसो सदा करो जैसो रावरो विरद् नाथ,
मोसो ऐसी करो जिन यहै अर्ज मानियो ॥३१॥

करौं अपराध भोर साँझ कोर कोर नित,
अति ही कठोर मति और को न कामहूं ।
आतुर अधीर तातैं धीरज धरत नांहि,
ऊँच नीच बोली ठोली बकूँ आठों जाम हूं ॥
अरचा न जानूं कछु चरचा न बूझत हूं,
कबू हेत प्रीति सों न लेत हरिनाम हूं ।
सबैं तकसीर बलवीर ! मेरी क्षमा करो,
कहै माधोराम प्रभु ! तिहारो गुलाम हूं ॥३२॥

(दोहा)

या करुना बत्तीसि कों, पढ़ैं सुनैं नर नारि ।
तिनके सब दुख द्वन्द् को, काटैं कृष्णामुरारि ॥

इति समाप्त ।

शक्ति भक्ति के पढ़ने से सर्वसाधारण समझ सकते हैं कि माधवराम सिर्फ शक्ति के उपासक थे। किन्तु करुणा-बत्तीसी से विदित हो जाता है कि वह जिस भाँति शक्ति में भक्ति रखते थे उसी भाँति भगवान् के भी अनन्य भक्त थे। करुणा-बत्तीसी में उन्होंने विष्णु की महिमा मन खोल कर गाई है और सच्चे भक्त होने का परिचय दिया है। भक्तों के प्रति भगवान् के किये हुए उपकारों को बताने के साथ में उनकी लीलाएं भी दिखलादी हैं और दूसरों के कुटुम्ब कबीले धन दौलत व्यापार या सेवा पूजा आदि के आधार और काम गिना कर अपने आपको केवल भगवान् के आश्रय बतलाया है। यह सब कुछ कहने के पीछे माधवराम ने भगवान् को लताड़े भी हैं। कहा है कि आपने सतयुग द्वापर और त्रेता के भले आदमियों की भलाई भले ही की हो। हम जैसे कलियुगी जीवों की तो कुछ की नहीं। की भी होगी तो जैसे अहल्या और द्रौपदी आदि की इज़्ज़त बिगड़ा कर पीछे उपकार किया वैसे की होगी। या कीर, गीध, वेश्या और व्यभिचारियों की की होगी। कुलीन आदमियों का तो आपने कभी कुछ भला किया नहीं। खैर कुछ भी करो आपकी मर्जी है मुझे तो एकमात्र आप ही का शरण है। आप ही मेरा उद्धार करेंगे, अस्तु।

करुणाऽष्टक

(सवैया)

राख लयो गज को हरि ग्राह तें,
घंट तले सुत राखे टटेरी ।
आग तें राख लयो प्रहलाद,
पुरान बतावत साख घनेरी ॥
इन्द्र के कोप समैं ब्रज गोप गो,
राख लये सब बेर करेरी ।
दीनदयाल कृपाल दयानिधि,
वेही सहाय करो प्रभु मेरी ॥ १

रुक्मिनि की व्रत राख लई हरि,
मार विदार कैं राय चन्देरी ।
राज कन्यान की टेर सुनी,
नरकासुर मार के बंध निवेरी ॥
भूपति बंधते मोक्ष कियो,
जरासंध ने पायन डारिही बेरी ।

दीनदयाल कृपाल दयानिधि,
वेही सहाय करो प्रभु मेरी ॥ २ ॥

पेट परीक्षित राख लियो हरि,
द्रौनिकों अस्त्र विदारन देरी ।
मेवा तजे दुरयोधन दुष्ट के,
प्रीतिसौं साग भख्यो घर चेरी ॥
सन्तन के चित शोच मिटायबे,
चक्र गह्यो कर भारत बेरी ।
दीनदयाल कृपाल दयानिधि,
वेही सहाय करो प्रभु मेरी ॥ ३ ॥

राखे हैं लाख के धाम में पाण्डव,
पावक तें सुत राखे मँजेरी ।
सोच अक्रूर को दूर किये अरु,
मान दयो पुनि कंस की चेरी ॥
पँचालि की टेर सुनी ततकाल,
बढ़ाय के चीर करी ढिग ढेरी ।

दीनदयाल कृपाल दयानिधि,
वेही सहाय करो प्रभु मेरी ॥ ४ ॥

गौतम नारकों तार दईसु,
विमान में वैठ के स्वर्ग गहेरी ।
वेश्या अजामिल से पतितान की,
पार करी भवसिंधु तें वेरी ॥
दामा के धाम रचे सव अद्भुत,
द्वार कवीर के वालध घेरी ।
दीनदयाल कृपाल दयानिधि,
वेही सहाय करो प्रभु मेरी ॥ ५ ॥

नामां की छांन छवाय दई अरु,
गाय जिवाय के गोधन फेरी ।
काढी जनेऊ रैदास के कंठ तें,
देवल की रुख तादिस फेरी ॥
खेत धना निपजाय दयो,
नरसी महता किसु हुएडी सकेरी ।

दीनदयाल कृपाल दयानिधि,
वेही सहाय करो प्रभु मेरी ॥ ६ ॥

जिवाय दई जयदेव की नारी,
कियो विष अमृत मीराँ की बेरी ।
यों चकवानको राखलयो हरि,
बाज मरयो सर व्याल अहेरी ॥
राखे दवानल तें मृग बालक,
हाहा करि के हरिनी जब टेरी ।
दीनदयाल कृपाल दयानिधि,
वेही सहाय करो प्रभु मेरी ॥ ७ ॥

शारद नारद शेष जपैं नित,
कीरति व्यास करैं बहुतेरी ।
ध्रू कूं अभै पदराज दयो हरि,
बाजत नौबत दुंदुभि भेरी ॥
भीर परैं भकतान में नाथ,
अनाथ के हाथ गहेंही सवेरी ।

दीनदयाल कृपाल दयानिधि,
वेही सहाय करो प्रभु मेरी ॥ ८ ॥

(दोहा)

या करुणाष्टक कों पढ़ैं, साँझ मध्य अरु भोर।
तिनके संकट सब हरैं, निश्चय नंदकिशोर ॥९॥

चित में अति विश्वास धर, गहि भक्तन की टेक।
माधोराम कहै प्रभू, टारैं विघ्न अनेक ॥१०॥